

सामाजिक विश्लेषण

(इतिहास)

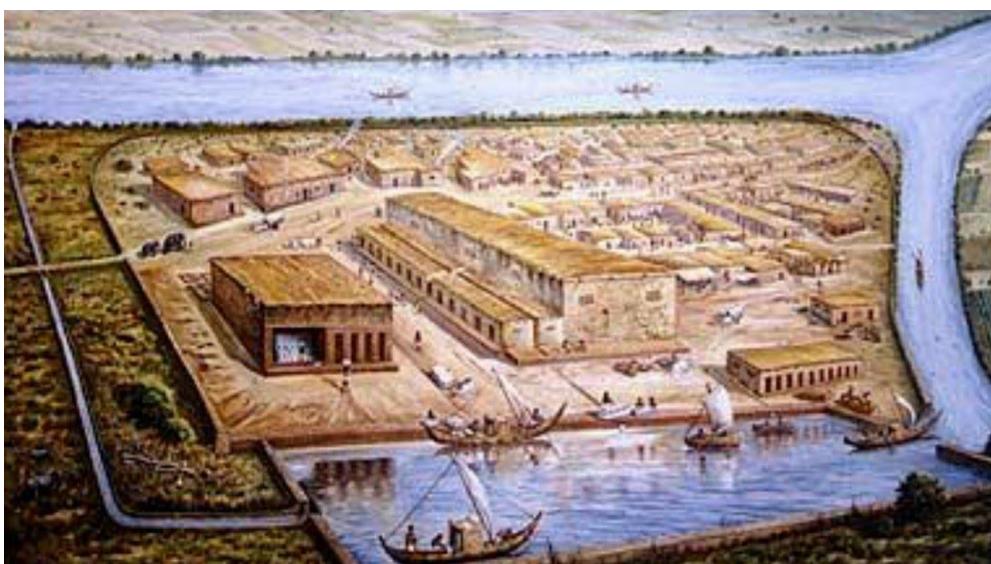
अध्याय-३: आरंभिक नगर



हड्प्पा की कहानी



लगभग 150 साल पहले जब पंजाब में पहली बार रेलवे लाइनें बिछाई जा रही थीं , तो इस काम में जुटे इंजीनियरों को अचानक हड्प्पा पुरास्थल मिला , जो आधुनिक पाकिस्तान में है। यह सभ्यता सिंधु नदी के निकट विकसित हुई। यह सभ्यता 4700 साल पहले विकसित हुई। हड्प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी जोकि अपने समकालीन मिस्र , मेसोपोटामिया व अन्य सभ्यताओं से लगभग सभी क्षेत्रों में काफी विकसित थी। इसका विस्तार भी इन सभी सभ्यताओं से कहीं अधिक था। ये सभ्यता आज से लगभग 4500 वर्ष पूर्व में उद्भूत हुई थी तथा लगभग 3500 वर्ष पूर्व पतन को प्राप्त होकर नष्ट हो गई।

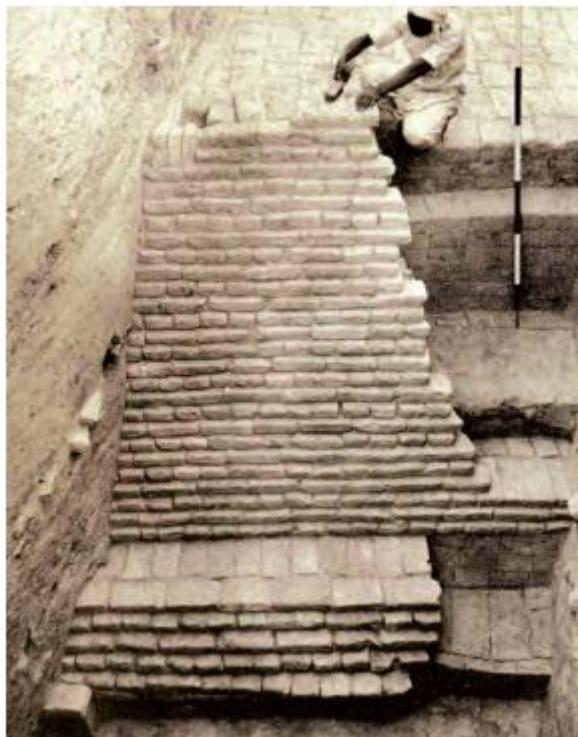


हड्पा सभ्यता की नगर योजना

हड्पा के लोगों का जीवन बहुत ही सुखद और शांतिपूर्ण था। हड्पा समुदाय ग्रामीण इलाके में रहता था। वे लोग बहुत ही अच्छे विचारों के और मददगार लोग थे, वे बिलकुल भी खतरनाक नहीं थे। जिन बड़े शहरों के घरों में लोग रहते थे, वे घर पांच फुट की लंबाई और 97 फुट की चौड़ाई के हुआ करते थे। उनके भवनों में दो कमरे वाले घर होते थे।

हड्पा सभ्यता के शहरों को बहुत अच्छी योजना और बड़ी खूबसूरती से बनाया गया था। सड़क के दोनों किनारों पर पंक्तियों में घर बनाए गए थे।

भवन का निर्माण करने के लिए उन्होंने धूप में सूखी हुई ईंटों का प्रयोग किया था।



कुछ घर गलियों में भी बनाये गये थे। अमीर लोग बड़े घरों में रहते थे, उनके पास कई कमरे वाले घर होते थे। मुख्य रूप से, गरीब लोग छोटे घरों और झोपड़ियों में रहते थे।

अनाज रखने का कोठार, जो 45.71 मीटर लंबा और 15.23 मीटर चौड़ा हुआ करता था। हड्पा के दुर्ग में छ: कोठार मिले हैं, जो ईंटों के चबूतरे पर दो पांतों में खड़े हैं।

जनता के लिए मोहन जोदङो द्वारा स्नानागार की खोज की गई। यह सिंधु सभ्यता की मुख्य सुविधा में से एक थी। हड्प्पा सभ्यता के शहरों में मकान बनाने के लिए भी धूप में सूखी हुई ईंटों का इस्तेमाल किया जाता था।

शहर में मंदिर बनाने के लिए कई ईंटें और मिट्टी का इस्तेमाल होता था। जल निकासी से बचने के लिए उन्होंने जलाशय बनाये और उसमें मिट्टी का उपयोग किया।

बौद्ध धर्म के लोगों के लिए स्नानागार का निर्माण किया गया था, पूजा करने वाले कपड़े बदलने के लिए छोटे कमरे इस्तेमाल करते थे तथा इसके बाद देवी की पूजा करते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता में, जल निकासी प्रणाली बहुत व्यवस्थित क्रम में थी, हर घर में सबसे अच्छी सुविधा के लिए नाली व्यवस्था का प्रयोग किया गया था। प्रत्येक घर से पानी की निकासी का स्थान ईंटों से बनाया गया था।

घरों में पानी का उपयोग करने के बाद पानी बहकर नाली में जाता था। पानी की निकासी के लिये नालियां बनाई गई थीं।

नाले को बंद करने के लिए उन्होंने बड़े पत्थर का इस्तेमाल किया, जिससे हानिकारक रोगों बचा जा सके। नालियों को सड़क के भूमिगत मैदान के किनारे पर बनाया गया था। नालियों की जल निकासी सड़क के साथ जुड़ी हुई थी।

लोगों की अर्थव्यवस्था

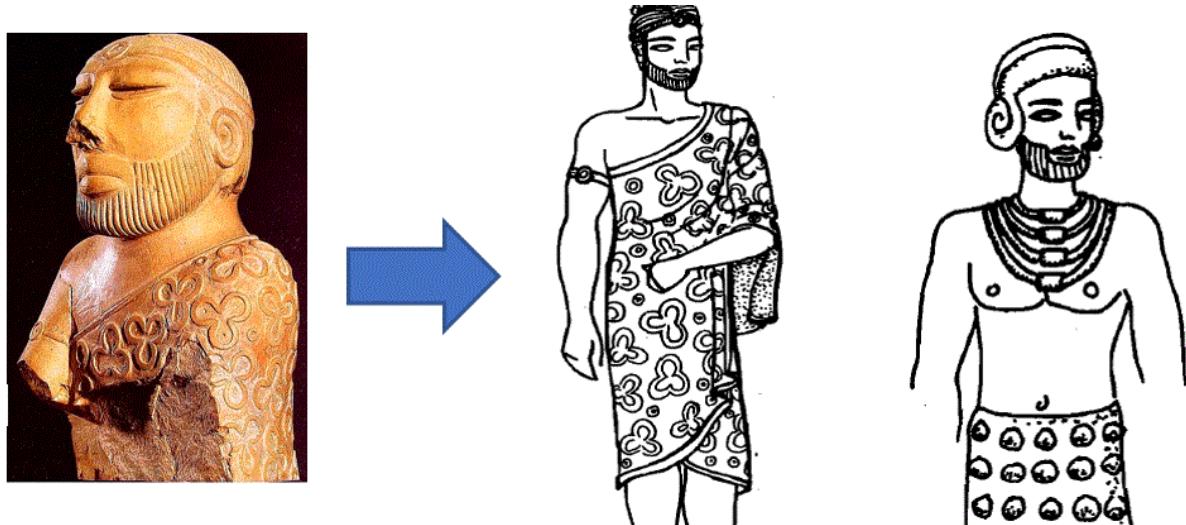


हड्पा सभ्यता की अर्थव्यवस्था व्यापार पर निर्भर करती थी। हड्पा की प्रगति का मुख्य कारण परिवहन व्यापार था। परिवहन प्रौद्योगिकी के प्रमुख अग्रिमों ने हड्पा के लोगों के लिए सहायता भी की थी।

वे व्यापार के लिये बैल-गाड़ियाँ और नाव का इस्तेमाल करते थे और यही परिवहन का मुख्य स्रोत था। बैल-चालित गाड़ियां दक्षिण एशिया की पहचान थीं।

वे नौकाओं और बैलगाड़ियों के उपयोग करके व्यापार करते थे। अधिकांश नौका छोटे और समतल तल की बनी थी, और नाविक के द्वारा संचालित होती थी, जिसको आज भी सिंधु नदी पर देख सकते हैं।

हड्पा का पहनावा



हड्पा के लोग कॉटन और ऊन से बने कपड़ों की पोशाक पहनते थे। ज्यादातर लोगों को इन कपड़ों के बारे में पता नहीं था।

वे लोग कपड़े के दो अलग-अलग हिस्सों का इस्तेमाल करते थे, जो शरीर के ऊपरी और निचले हिस्से को ढकने में मदद करता था। उस समय आदमी दाढ़ी रखते थे, लेकिन आम तौर पर उनकी मूँछें नहीं होती थीं।



महिलायें अपने बालों की लट को रिबन द्वारा बांधती थी, वह अपने बालों को कपड़े से ढकना पसंद करती थी। उस समय पुरुष और महिलायें दोनों गहने पहनना पसंद करते थे।

हड्प्पा नगरों की विशेषता

इन नगरों को हम दो या उससे ज्यादा हिस्सों में बाँट सकते हैं

- **नगर दुर्ग** – यह पश्चिम भाग था और यह ऊँचाई पर बना था तथा अपेक्षाकृत छोटा था
- **निचला -नगर** – यह पूर्वी भाग था और यह निचले हिस्से पर बना था यह बड़ा भाग था।

दोनों हिस्सों की चारदीवारी पक्की ईट की बनाई गई थी

हड्प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता और कला

हड्प्पा सभ्यता के लोगों में कला को पहचानने की योग्यता थी। वे लोग विभिन्न प्रकार के पुताई और चमकने वाले मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल किया करते थे।



वे कई प्रकार के सामान को रंग लेते थे, यहाँ तक कि वे गाय, भैड़, बंदर, हाथी, भैंस, सूअर, आदि जानवरों को भी रंग दिया करते थे। उन्होंने विभिन्न प्रकार की मूर्तियों की खोज की और उन्हें रंग दिया करते थे।



टेररा-कोटा के कामों में, खिलौने की गाड़ियां पाई गईं। वे आधुनिक युग के बैल-गाड़ियों की तरह दिखती थीं। मोहन जोद़ो के खंडहर में बड़ी संख्या में चांदी, तांबा और कांस्य, कंघी और सुई, दर्पण, विभिन्न हथियारों से बने कई सामान और बर्तन पाए गए।

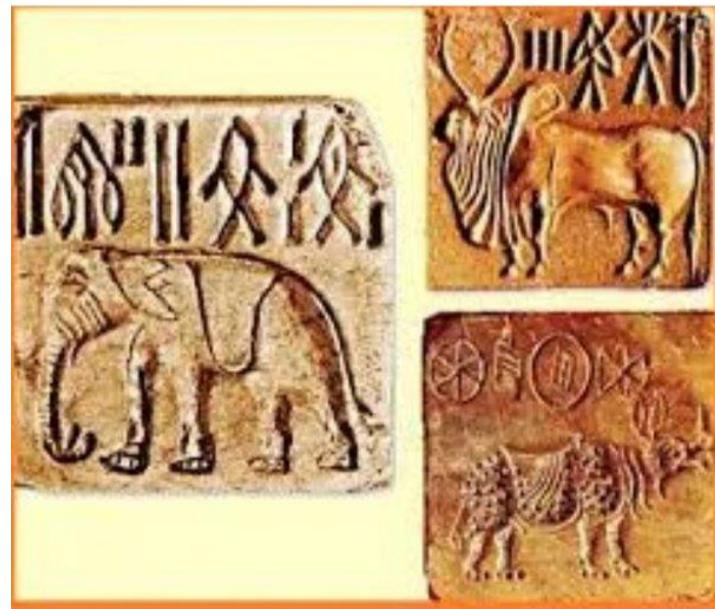


हड्पा सभ्यता की लिपि

हड्पा लोगों के लेखन सिरेमिक बर्तनों की मुहरों पर और शिला लेख पर पाए गए थे और लंबाई में 4 से 5 अक्षरों से अधिक नहीं थे; जिसमें सबसे लंबा अक्षर 26 था।



सिंधु घाटी सभ्यता एक और तरीके से रहस्यमय थी। विद्वान भी सिंधु की पटकथा को नहीं समझ सके, जो उन्होंने लिखा है कोई भी नहीं जानता कि कौन सी भाषा सिंधु लोग बोलने के लिए उपयोग कर करते थे। विद्वानों को भी इसका कोई सही सुराग नहीं मिल सका।



हड्पा संस्कृति घरेलू जानवर

घरेलू पशुओं जैसे गाय, सूअर, भैंस, कुत्ते और मेमने को विद्वानों के लेखन में संदर्भ किया गया है।

हड्पा संस्कृति के लोगों का भोजन

धान की खोज में हड्पा मुख्य रूप से कृषि का स्थान था। हड्पा लोगों का मुख्य भोजन मुख्यतः गेहूं, जौ और बादाम था।



हड्पा शहरों के लोगों के लिए भोजन के निम्नलिखित सामान उपलब्ध थे:

- अनाज़: गेहूं, जौ, मसूर, मटर, ज्वार, बाजरा, तिल, सरसों, राई, चावल आदि।
- मवेशियों, भेड़, बकरी, भैंस, सुअर का मांस।
- हिरण, सूअर, घड़ियाल आदि जैसे जंगली प्रजातियों का मांस।



- पौधे और उनके उत्पाद।

हड्प्पा सभ्यता का धर्म

मोहन जोदडो और हड्प्पा में कोई मंदिर और देवता की छवि नहीं थी। हड्प्पा और सिंधु लोग अपने स्थान को लेकर बहुत ही धार्मिक थे। वे मां को पूजते थे जिसमें शिव पशुपति प्रख्यात थे। वे “लिंग” और वृक्ष, सांप, पशु आदि की पूजा भी करते थे।

हड्प्पा सभ्यता के लोगों के गहने



हड्पा और सिंधु के गहने सोने और अन्य धातुओं द्वारा बनाए गए थे। गहने में मुलायम धातुओं का प्रयोग किया गया था। महिलाएं सोने के गहने का इस्तेमाल उसी पथर के टुकड़े के साथ करती थीं जिस प्रकार के रंग के वे वह कपड़े पहनती थीं।



हड्पा सभ्यता का अंत

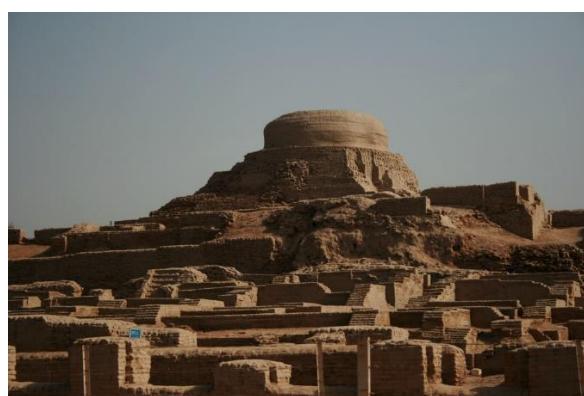
अधिकांश विद्वानों के मतानुसार इस सभ्यता का अंत बाढ़ के प्रकोप से हुआ। चूँकि सिंधु घाटी सभ्यता नदियों के किनारे-किनारे विकसित हुई, इसलिए बाढ़ आना स्वाभाविक था, अतः यह तर्क सर्वमान्य हैं। परन्तु कुछ विद्वान मानते हैं कि केवल बाढ़ के कारण इतनी विशाल सभ्यता समाप्त नहीं हो सकती।



हड्पा सभ्यता के पतन के कारण

- आर्यों का आक्रमण
- महामारी
- पर्यावरण का असंतुलन
- जलवायु परिवर्तन
- जनसंख्या की अनपेक्षित वृद्धि
- नदियों के मार्ग-परिवर्तन
- व्यापारिक गतिविधियों की कमी
- नदियों से आने वाली बाढ़

मोहनजोदड़ो



मोहनजोद़डो का मतलब है मुर्दों का टीला, दक्षिण एशिया में बसे इस शहर को सबसे पुराना शहर माना जाता है, यह बहुत ही व्यवस्थित ढंग से बनाया गया था। पाकिस्तान के सिंध में 2600 BC के आस पास इसका निर्माण हुआ था। इस नगर में विशाल स्नानागार मिला यह स्नानागार ईट व प्लास्टर से बनाया गया था इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर लिए प्लास्टर के ऊपर चॉकोल की परत चढ़ाई गई थी। इस सरोवर में दो तरफ से उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गयी थीं और चारों ओर कमरे बनाए गए थे। कालीबंगा और लोथल से अग्निकुंड मिले हैं। हड्पा और मोहनजोद़डो से भंडार ग्रह मिले हैं।



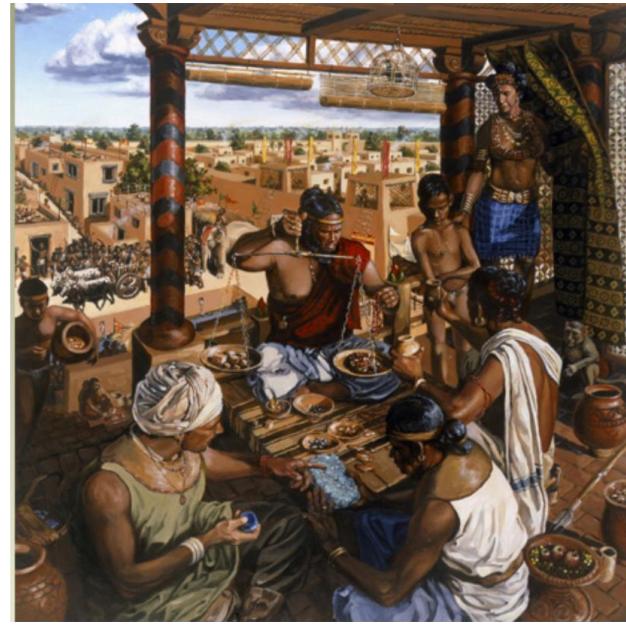
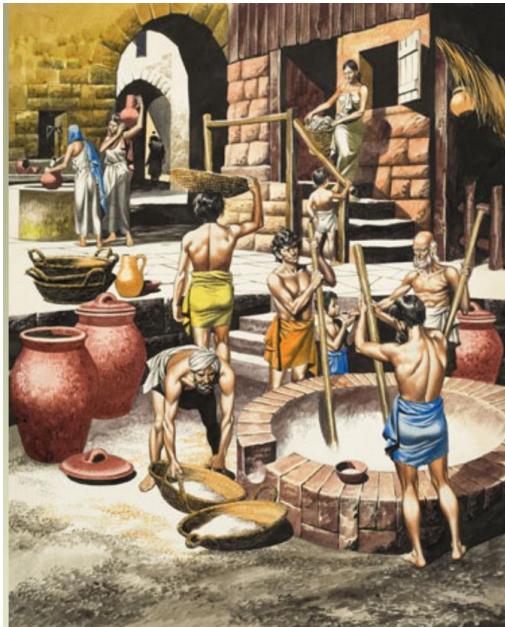
भवन, नाले, और सड़कें

इन नगरों के घर आमतौर पर एक या दो मंजिले होते थे। घर के आँगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे। अधिकांश घरों में एक अलग स्नानघर होता था और कुछ घरों में कुर्चे भी होते थे। कई नगरों में ढके हुए नाले थे। जल निकासी प्रणाली काफी विकसित थी। घर, नाले और सड़कों का निर्माण योजनाबद्ध तरिके से किया गया था।

नगरीय जीवन

हड्पा के नगरों में बड़ी हलचल रहा करती होगी। नगरों में लोग निर्माण कार्य में संलग्न थे तथा यहाँ पर धातु, बहुमूल्य पत्थर, मनके, सोने, चाँदी से बने आभूषण प्राप्त हुए हैं। लिपिक - कुछ लोग मुहरों पर लिखते थे। कुछ लोग शिल्पकर थे ताँबे और काँसे - औजार, हथियार, घने बर्तन

बनाए जाते थे। चाँदी और सोने – गहने एवं बर्तन बाट – चर्ट पत्थर मनके – कार्निलियन पत्थर हड़प्पा के लोग पत्थर की मुहरे बनाते थे।



गाँव का विकसित रूप नगर कहलाता है। जहाँ आज से 40 वर्ष पूर्व गाँव का प्राकृतिक वातावरण था, आज वहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें तथा सड़कें निर्मित हो गयी हैं। गाँव के प्राकृतिक वातावरण का विकास कर भौतिक वातावरण के विकास का स्वरूप ही नगर रूप में परिभाषित होता है। सामान्य रूप से नगरीय जीवन पर विचार किया जाये तो नगरीय जीवन ग्रामीण जीवन की तुलना में अनेक प्रकार की भिन्नता रखता है। ग्रामीण जीवन में जहाँ एक ओर जनसंख्या कम होती है वहीं नगरों में जनसंख्या बहुत अधिक होती है। इस प्रकार के अनेक अन्तर ग्राम एवं नगरों में पाये जाते हैं। इसलिये नगरों की जीवन शैली भी पूर्णतः भिन्न होती है। वर्तमान समय में नगरों का निर्माण बाहरी लोगों के बसने के कारण होता है। इसके परिणामस्वरूप नगरीय जीवन शैली में पर्याप्त अन्तर होता है। यहाँ की बोली में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है क्योंकि यहाँ पर भिन्न संस्कृतियों के लोग रहते हैं। इसलिये रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं में भिन्नता पायी जाती है। समाजशास्त्रियों द्वारा नगर को परिभाषित करते हुए अपने पृथक्-पृथक् विचार प्रस्तुत किये हैं। लूमिस ने लिखा है, "नगर एक ऐसा समुदाय है जिसे दूसरे समुदायों से जनसंख्या के आकार, घनत्व, व्यवसाय की प्रवृत्ति तथा सामाजिक सम्बन्धों जैसी भिन्नताओं के आधार पर पृथक् किया जा सकता है।

फेयॉन्स – बालू या स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर तैयार किया गया पदार्थ।

नगरीय जीवन की विशेषताएँ:-

1. जनसंख्या की अधिकता-

नगरीय जीवन में जनसंख्या अधिक होती है। आज भी वर्तमान समय में अनेक नगर ऐसे हैं जिनमें बहुत अधिक जनसंख्या पायी जाती है तथा व्यक्ति फुटपाथ पर रात बिताने के लिये विवश होता है। मुम्बई में आज भी हजारों की संख्या में व्यक्ति फुटपाथ पर सोते हैं। अनेक बड़े नगरों की जनसंख्या करोड़ों में पहुँच गयी है। प्रत्येक स्थान पर जन समूह दिखायी देता है जिससे नगरीय संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। लोगों को रहने के लिये पर्याप्त मात्रा में घर भी नहीं मिल पा रहा है।

2. विविधता की स्थिति-

विविधता की स्थितियों पर दृष्टिपात किया जाये तो नगरीय जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में विविधता पायी जाती है। अतः नगरों में रहने वाले व्यक्ति विभिन्न धर्मों, जाति एवं संस्कृति के होते हैं क्योंकि वह नगर में अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये विविध स्थानों से आते हैं; जैसे-मुम्बई में हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम एवं ईसाई धर्म को मानने वाले मिलेंगे तथा वहाँ पर रहने वाले व्यक्तियों की भाषा एवं जीवन शैली में भी पर्याप्त भिन्नता की स्थिति दृष्टिगोचर होगी।

3. विकसित तकनीकी-

नगरीय जीवन में किसान एवं प्रौद्योगिकी का विकास तीव्र गति से होता है। यहाँ पर प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी का व्यापक दृष्टि से उपयोग किया जाता है। विद्यालयों में कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है तथा वालकों को कम्प्यूटर का ज्ञान प्रदान किया जाता है। भवन निर्माण में भी यह बहुमंजिला भवनों के निर्माण की तकनीकी का प्रयोग किया जाता है क्योंकि यहाँ पर स्थान का अभाव होता है। इसी प्रकार उद्योगों में भी व्यापक रूप से तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। यह नगरीय जीवन विकसित तकनीकी पर आधारित जीवन है।

4. विकसित परिवहन व्यवस्था-

नगरीय जीवन में मोटरगाड़ी, कार, बस एवं लोकल ट्रेनों के माध्यम से आवागमन की सुविधा होती है। इससे नगर का विशाल क्षेत्र भी समीप सा लगाने लगता है। आज मुम्बई एवं कोलकाता जैसे महानगरों में व्यक्ति 100 से 150 किमी. तक की यात्रा सामान्य रूप से करके शाम को अपने घर आ जाता है। व्यक्ति नगर के एक कोने से दूसरे कोने तक सरलता से कार्य करने के

लिये अच्छी परिवहन स्थापना द्वारा आ-जा सकते हैं। इस प्रकार उच्च तकनीकी एवं सुविधायुक्त वाहन नगरीय पारवहन व्यवस्था में देखने को मिलते हैं।

5. श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण की स्थिति-

नगरीय जीवन में प्रत्येक कार्य विशेषज्ञता के आधार पर होता है क्योंकि कार्य में अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं; जैसे-एक व्यक्ति स्कूटर का मैकेनिक होता है तो वह स्कूटर को ठीक करने का कार्य करेगा। वहीं बाइक बनाने वाला व्यक्ति बाइक बनाने का कार्य करेगा क्योंकि दोनों को ही अपने-अपने कार्य क्षेत्र में विशेषज्ञता की स्थिति प्राप्त होती है। इसके साथ-साथ किसी एक मशीन या वस्तु के निर्माण में भी पृथक्-पृथक् कार्य विशेषज्ञ व्यक्तियों को दिये जाते हैं। पंखे की मोटर बनाने का कार्य किसी एक कम्पनी को तथा पंखुड़ी बनाने का कार्य किसी दूसरी कम्पनी को दिया जा सकता है। इस प्रकार नगरीय जीवन में श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण की स्थिति व्यापक रूप से देखी जा सकती है।

6. व्यावसायिक भिन्नता-

नगरीय जीवन में व्यावसायिक भित्रता की स्थिति देखने को मिलती है। इसमें कुछ व्यापार थोक विक्रेता के रूप में तथा कुछ खुदरा विक्रेता के रूप में सम्पन्न किये जाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में अनेक प्रकार के कारखाने पाये होते हैं, जिससे व्यावसायिक भिन्नता देखी जाती है। कुछ व्यक्ति परिवहन के क्षेत्र में अपनी जीविकोपार्जन करते हैं तथा कुछ व्यक्ति कारखानों में कार्य करके जीविकोपार्जन करते हैं। जितना बड़ा नगर होता है जीविकोपार्जन के साधन एवं व्यावसायिक अवसरों की उपलब्धता जितनी ही अधिक होती है। नगरीय जीवन व्यावसायिक भिन्नताओं से युक्त जीवन है। को स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है; जैसे-हिन्दू महिलाएँ धोती या साड़ी पहनती हैं वहीं मुस्लिम महिला बुर्का पहनती हैं। यदि पंजाबी महिलाएँ सलवार सूट पहनती हैं तो ईसाई महिला जीन्स टॉप पहनती हैं इस प्रकार की वेशभूषा सम्बन्धी भिन्नता नगरीय जीवन में देखने को मिलती है। इस प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी यह देखा जाता है कि नगरीय जीवन शैली में

7. सांस्कृतिक भिन्नता-

नगरीय जीवन में सांस्कृतिक भिन्नताको स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है; जैसे-हिन्दू महिलाएँ धोती या साड़ी पहनती हैं वहीं मुस्लिम महिला बुर्का पहनती हैं। यदि पंजाबी महिलाएँ सलवार सूट पहनती हैं तो ईसाई महिला जीन्स टॉप पहनती हैं इस प्रकार की वेशभूषा सम्बन्धी भिन्नता

नगरीय जीवन में देखने को मिलती है। इस प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी यह देखा जाता है कि नगरीय जीवन शैली में सांस्कृतिक भिन्नता है; जैसे-त्यौहारों का मनाना, परम्पराओं में विश्वास, सामाजिक विश्वास एवं धार्मिक विश्वास आदि।

8. आर्थिक भिन्नताएँ-

नगरीय जीवन में आर्थिक भिन्नताओं की स्थिति को देखने को मिलती है। बड़े-बड़े नगरों में गरीब वर्ग के व्यक्ति झुग्गी एवं झोंपड़ियों में निवास करते हैं तथा मजदूरी करके अपना पालन पोषण करते हैं वहीं दूसरी नगरों के धनवान व्यक्ति बड़े-बड़े घरों में निवास करते हैं जो कि आधुनिक सुविधाओं से युक्त होते हैं। नगरीय जीवन में आर्थिक स्तर की दृष्टि से निर्धन व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है तथा धनवान व्यक्तियों की संख्या कम होती है। अतः आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियों को गरीबी रेखा से नीचे माना जाता है।

9. जीवन स्तर में भिन्नता-

नगरीय जीवन में जीवन स्तर में भी व्यापक रूप से भिन्नता देखी जाती है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले सम्पन्न व्यक्तियों का जीवन स्तर उच्च होता है। उनके णस घूमने के लिये वाहन एवं रहने के लिये अच्छे घर होते हैं तथा वे सन्तुलित भोजन करते हैं वहीं निर्धन वर्ग के व्यक्ति का जीवन स्तर निम्न होता है। इस स्तर के व्यक्तियों को न तो रहने के लिये अच्छे घर होते हैं और न ही उनको सन्तुलित भोजन मिलता है। नगरीय जीवन में अनेक बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते हैं।

10. प्रतिस्पर्धा की भावना-

नगरीय जीवन शैली में प्रतिस्पर्धा की भावना पायी जाती है। नगरीय जीवन में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी रहती है। इसके लिये व्यक्ति अनैतिक कार्यों का सहारा लेता है; जैसे-नकली दवाइयाँ बेचना, नकली वस्तुएँ बेचना तथा कर की चोरी करना आदि। इससे व्यक्ति अपना लाभ अधिकतम करना चाहता है। इसके लिये वह सामने वाले व्यक्ति को हानि भी पहुँचाने का प्रयास करता है। इस प्रकार शहरी जीवन में विध्वंसयात्मक प्रतियोगिता की स्थिति अधिकतम देखी जाती है।

कच्चा मॉल - जो प्राकृतिक रूप से मिलते हैं या फिर किसान या पशुपालक उनका उत्पादन करते हैं। मेहरगढ़ - 7000 साल पहले कपास की खेती होती थी।

कच्चे माल का आयत

ताँबा – राजस्थान और ओमान से, सोना – कर्नाटक, टिन – ईरान, बहुमूल्य पत्थर – गुजरात ईरान अफगानिस्तान अफगानिस्तान बहुमूल्य पत्थर।

भोजन

हड्प्पाई लोग जानवर पालते थे और अनाज उगाते थे – यहाँ लोग गेहूँ, जौ, दाल, मटर, धन, तिल और सरसों उगाते थे – जुताई के लिए हल का प्रयोग होता था और सिंचाई के लिए जल संचय किया जाता होगा।

हड्प्पा के लोग – गाय, भैंस, भेड़, बकरियाँ पालते थे तथा बेर को इकट्ठा करना मच्छलियाँ पकड़ना तथा हिरण जैसे जानवरों का शिकार करते थे।

धौलावीरा

(गुजरात) खदिर बेट के किनारे बसा था। इस नगर को तीन भागों में बाँटा गया था हर हिस्से के चारों और पत्थर की ऊँची दीवारे बनाई गई थी। इसमें बड़े बड़े प्रवेश द्वार थे एक खुला मैदान था जिसमें सार्वजानिक कार्यक्रम आयोजन किये जाते होंगे इस स्थान पर हड्प्पा लिपि के बड़े बड़े अक्षर को पत्थर में खुदा पाया गया है।

लोथल

खम्भात की खड़ी में मिलने वाली साबरमती उपनदी के किनारे बसा था, यहाँ शंख, मुहरे, मुद्रांकन या मुहरबंदी, भंडार गृह मिले हैं।

सभ्यता के अंत के कारण :-

- नदियाँ सुख गई
- जंगलों का विनाश
- बाढ़ आ गई
- चरागाह समाप्त हो गए

- शासको का नियंत्रण समाप्त हो गया युद्ध इत्यादि

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 34)

प्रश्न 1 पुरातत्त्वविदों को कैसे ज्ञात हुआ कि हड्डिया सभ्यता के दौरान कपड़े का उपयोग होता था ?

उत्तर - पुरातत्त्वविदों को निम्नलिखित कारणों से ज्ञात हुआ कि हड्डिया सभ्यता के दौरान कपड़े का उपयोग होता था

1. 7,000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती किए जाने के प्रमाण मिले हैं।
2. मोहनजोदहो में चांदी का एक फूलदान तथा तांबे की कुछ अन्य वस्तुओं पर कपड़े के अवशेष लिपटे मिले हैं।
3. पक्की मिट्टी तथा फेयंस से बनी तकलियां सूत कताई का संकेत देती हैं।
4. मोहनजोदहो में एक पत्थर की मूर्ति मिली है। इसमें उसे कढ़ाईदार वस्त्र पहने हुए दिखाया गया है।

प्रश्न 2 निम्नलिखित का सुमेल करो-

- | | |
|-------------------|--------------|
| 1. ताबाँ | गुजरात |
| 2. सोना | अफ़गानिस्तान |
| 3. टिन | राजस्थान |
| 4. बहुमूल्य पत्थर | कर्नाटक |

उत्तर -

- | | |
|-------------------|--------------|
| 1. ताबाँ | राजस्थान |
| 2. सोना | कर्नाटक |
| 3. टिन | अफ़गानिस्तान |
| 4. बहुमूल्य पत्थर | गुजरात |

प्रश्न 3 हड्डिया के लोगों के लिए धातुएं, लेखन, पहिया और हल क्यों महत्त्वपूर्ण थे ?

उत्तर – हड्प्पा के लोगों के लिए धातुएं, लेखन, पहिया और हल निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण थे

- धातुएं-** हड्प्पा के लोग धातुओं का प्रयोग बर्तन और आभूषण बनाने के लिए करते थे। तांबा, टिन और सोना इन लोगों की प्रमुख धातुएं थीं। तांबे का आयात पश्चिमी एशियाई देश ओमान से, टिन का आयात ईरान तथा अफ़गानिस्तान से और सोने का आयात कर्नाटक से किया जाता था।
- लेखन-** हड्प्पा के लोगों की अपनी एक विशेष लिपि थी। हड्प्पा से मिले अवशेषों में इस लिपि के बड़े-बड़े अक्षरों को पत्थरों में खुदा पाया गया है। इस प्रकार की लिपि मुहरों पर छपी मिली है।
- पहिया-** पहिए की सहायता से हड्प्पा के लोग छकड़ों तथा गाड़ियों को खींचते थे। वे इसकी सहायता से मिट्टी के बर्तनों को गोल करने का काम भी करते थे।
- हल-** हल से भूमि की जुताई की जाती थी। हल खेती करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। पक्की मिट्टी से बने खिलौना हल बच्चों के खेलने के काम आते थे।

प्रश्न 4 इस अध्याय में पक्की मिट्टी (टेराकोटा) से बने सभी खिलौनों की सूची बनाओ। इनमें से कौन-से खिलौने बच्चों को ज्यादा पसंद आए होंगे?

उत्तर – हड्प्पा के लोगों ने पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के अनेक खिलौने बनाए थे। इन खिलौनों में खिलौना-गाड़ी, खिलौना हल, तथा पशु-पक्षियों के नमूने प्रमुख थे। बच्चों को ये सभी खिलौने पसंद आए होंगे। इन खिलौनों में से पशु-पक्षियों के नमूने बच्चों को बहुत अधिक पसंद आए होंगे।

प्रश्न 5 हड्प्पा के लोगों की भोजन सामग्री की सूची बनाओ। आज इनमें से तुम क्या-क्या खाते हो ? निशान लगाकर बताओ।

उत्तर –

क्र०स०	हड्प्पा के लोगों की भोजन सामग्री	आज भी खाए जाने वाली भोजन सामग्री
--------	----------------------------------	----------------------------------

1	गेहूँ	हाँ
2	जौ	हाँ
3	चावल	हाँ
4	दालें	हाँ
5	मटर	हाँ
6	तिल	हाँ
7	सरसों	हाँ
8	फल	हाँ
9	मछली	हाँ
10	हिरण	नहीं

प्रश्न 6 हड्पा के किसानों और पशुपालकों का जीवन क्या उन किसानों से भिन्न था, जिनके बारे में तुमने पिछले अध्याय में पढ़ा है ? अपने उत्तर में इसका कारण बताओ।

उत्तर – हड्पा सभ्यता एक नगर प्रधान सभ्यता थी। अतः हड्पा के किसानों और पशुपालकों का जीवन पहले के किसानों और पशुपालकों के जीवन से अवश्य ही भिन्न रहा होगा। पहले के किसान और पशुपालक अपने स्वयं के उपभोग के लिए उत्पादन करते थे, जबकि हड्पा के किसान और पशुपालक नगरों में रहने वाले अन्य शिल्पकारों के लिए भी भोजन का उत्पादन करते थे।